अमृत प्रार्थना
भगवान से

ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥
वेदों में, शास्त्रों में, पुराणों में भक्तों ने साधकों ने माया की प्रबलता को देखते हुए अंतर्यामी परमात्मा से यह प्रार्थना की है। गुरु और शिष्य का जो संबंध है वह संसार का सबसे पवित्र संबंध है और सबसे निर्मल संबंध है उसमें कहीं दूरी ना बन जाए।

इसलिए यह मंत्र साधकों के द्वारा गाया हुआ एक प्रार्थनामय पद है,प्रार्थनामय मंत्र है ।इस मंत्र के गायन से प्रार्थना स्वत: ही हो जाती है।

हे प्रभु ! हमारा हमारे गुरुदेव के साथ सदा ही प्रेम और मधुर का संबंध बना रहे । कभी हममें दूरी ना हो। भौतिक दूरी तो दिखाई देती है लेकिन मन के तार ना टूटे । मन की दूरियां ना बन जाए। मन से हम सदा साथ में रहे। वे जिस आध्यात्मिक ज्ञान-ध्यान- विज्ञान व उनका चित्त सदा ही हमभी उपभोग करें । वे त्यागी हैं, तेजस्वी हैं, तपस्वी हैं, संयमी हैं ,संकल्पवान हैं, प्रतिज्ञावान हैं। हम भी उनके यह सद्गुण ग्रहण करें ।हम भी उनके जैसे ही बने ।

मां विद्विषा वहै...

उनके मन में तो स्वप्न में भी हमारे प्रति दुर्भावना नहीं आएगी। मां-पिता छोटे बालक के प्रति कभी दुर्भावना वाले नहीं होते । चाहे कभी कान खींचता है, कभी नाक खींचता है, कभी बाल, आंख में उंगली करता है, शरीर पर मल मूत्र कर देता है, लेकिन माता-पिता को दुर्भावना नहीं आती उसके प्रति ।

वैसे ही उनके मन में तो कभी दुर्भावना नहीं आएगी। लेकिन माया के प्रभाव से हमारे मन में उनके प्रति दुर्भावना ना हो ना आ जाए ।